Sl.No. :

नामांक Roll No.

No. of Sections – 3

No. of Printed Pages – 07

SS–32–SH. HD. (Hindi)

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2019

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2019

हिन्दी शीघ्रलिपि

(SHORTHAND HINDI)

समय : 3¼ **घण्टे**

पूर्णांक : 40

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें ।

2) तीनों खण्ड एक ही बैठक में लिखाये जायें ।

3) प्रथम एवं द्वितीय खण्डों तथा द्वितीय एवं तृतीय खण्डों के बीच में 5-5 मिनट का मध्यान्तर दिया जाये । तीनों खण्डों के संकेत लिपि श्रुतलेखों के हिन्दी अक्षरीकरण के लिए 2¾ घंटे का समय दिया जाए ।

4) केवल निम्न विराम–चिह्न ही लगाएं :

पूर्ण विराम, अर्द्ध–विराम और प्रश्न–चिह्न एवं कोष्ठक ।

5) संकेत लिपि पेन्सिल से लिखा जाए तथा उसका अनुवाद हिन्दी में टंकण यंत्र / कम्प्यूटर से ही टंकित किया जाय । हाथ से लिखा मान्य नहीं होगा ।

6) संकेत लिपि में लिखा हुआ श्रुतलेख उत्तर–पुस्तिका के साथ नत्थी कर दिया जाए ।

7) संकेत लिपि के 20% अंक रखे गये हैं ।

8) खण्ड प्रथम 4 मिनट, खण्ड द्वितीय 5 मिनट तथा खण्ड तृतीय 7 मिनट लिखवाने के रखे गए हैं । प्रत्येक खण्ड 80 शब्द प्रति मिनट की गति से बोला जाय ।

यहाँ से काटिए

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फाड़ें

यहाँ से काटिए

प्रथम–खण्ड

(इसे 80 शब्द प्रति मिनिट की गति से लिखा जाए)

[10]

रतनलाल मदनलाल कम्पनी

(कपड़े के थोक व्यापारी एवम् कमीशन एजेन्ट)

पत्र क्रमांक : 998 कनाट प्लेस,

फोन नं./:0897605219 चर्च गेट, [¼]

न्यू देहली–6

सेवा में,

सर्व श्री मार्कण्ड क्लॉथ मिल्स,

हवा सड़क, इण्डस्ट्रीयल/एरिया, [½]

पानीपत (हरियाणा)

ईमेल: रतन @ जीमेल.कॉम

विषय:– आर्थिक स्थिति की पूछताछ के क्रम/में [¾]

प्रिय महोदय,

आपका पत्र संख्या – एन/ 15-773 दिनांक 10.02.19 का प्राप्त हुआ// इसके लिये धन्यवाद। [1] आपने हमारे ही शहर के सर्वश्री राधाचन्द कृष्णचन्द गोटेवाला, कपड़े के थोक व्यापारी, कपड़ा/ [1¼] मार्केट नई दिल्ली की आर्थिक स्थिति के बारे में हमसे जानकारी प्राप्त करनी चाही है।

इस संबंध में हमारा/ आपसे निवेदन है कि उक्त फर्म अपने शहर में पिछले 15 वर्षों से स्थापित [1½] है। हमारा इस फर्म से / पिछले 10-12 वर्षों से मधुर संबंध हैं। यह फर्म शहर के प्रतिष्ठित फर्मों [1¾] में से है।// [2]

इस फर्म द्वारा भुगतान प्राप्त करने में कभी भी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा है। इस फर्म द्वारा/ दिये गये चैक कभी भी अप्रतिष्ठित नहीं हुए हैं। ये नकद एवम् अग्रिम भुगतान करके सदैव [2¼] नकद छूट प्राप्त/ करने में विश्वास रखते हैं। [2½]

हमारे मतानुसार आप इस फर्म को नकद के साथ उधार माल का अनुबंध भी/ कर सकते है। [2¾]
आपके द्वारा नकद एवम् उधार अनुबंध करने पर हमारा कोई भी दायित्त्व नहीं होगा।

हमें// आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि हमारे द्वारा प्रदत्त की गई सूचना आप अत्यन्त ही [3]

गोपनीय रखेंगे। यदि/आप उचित समझें तो उक्त फर्म की जानकारी यहां स्थित बैंक एस.बी.आई. बैंक, [3¼]
राणी सती नगर,/ न्यू देहली–शाखा से भी प्राप्त कर सकते है, जिससे आप पूर्णरूप से सन्तुष्टि प्राप्त कर [3½]
सकें।/ [3¾]

सधन्यवाद।

भवदीय,

दिनांक : 18 फरवरी,2019

अजय कुमार,

रतनलाल मदनलाल कम्पनी के लिये,

साझेदार// [4]

द्वितीय–खण्ड

(इसे 80 शब्द प्रति मिनिट की गति से लिखा जाए)

[10]

जयपुर नगर,

प्रदूषण विरोधी समिति,

जे.डी. ए. सर्किल,

जयपुर–2

दिनांक: 10 फरवरी,/2019 [¼]

सेवा में,

श्रीमान् संपादक,

नव उजाला टाइम्स,

जयपुर–2

विषय: जन जीवन के स्वास्थ्य पर/ [½]

बढ़ता हुआ बुरा प्रभाव।

मान्यवर,

मैं आपके लोक प्रिय समाचार पत्र के माध्यम से जनता, अधिकारियों तथा/सरकार का ध्यान [¾]
नगर में कल कारख़ानों के कारण होने वाले प्रदूषण की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। कृपया//मेरा [1]
यह पत्र अपने समाचार पत्र में प्रकाशित करके अनुग्रहीत करें।

आज के वैज्ञानिक युग में उद्योग–धंधों/ का प्रसार हो रहा है। इन उद्योगों की चिमनियों से [1¼]
निकलने वाले धुएँ से, वायुमण्डल में बहुत प्रदूषण/हो रहा है। इस धुएँ के साथ–साथ औद्योगिक केन्द्रों [1½]
के फैक्ट्रियों और मशीनों से निकलने वाले कचरे/ एवम् गन्दे पानी से भी वायुमण्डल दूषित हो रहा है। [1¾]

प्रदूषण चाहे धुएँ से हो या कचरे से,// प्रत्येक कारण स्वास्थ्य के लिये घातक सिद्द होता है। यह [2]
अत्यन्त गंभीर शोचनीय विषय है। वातावरण में शुद्ध/वायु की कमी होती जा रही है, तथा बदबू फ़ैलती [2¼]
जा रही है। इस प्रदूषित वायु का सेवन करने / से भिन्न–भिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न होने लगे हैं। [2½]

जयपुर नगर के चारों ओर अनेक उद्योग/धन्धे स्थित हैं। उनकी चिमनियों से निकलने वाले धूएँ [2¾]
तथा कोयले की राख से यहाँ के निवासियों के स्वास्थ्य// पर बहुत बुरा असर हो रहा है। [3]

मेरी सरकार से अपील है कि वह इस प्रदूषण को रोकने के/ लिये अति– आवश्यक कदम उठाये। [3¼]
सरकार को नगर के जन– जीवन के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव/ पर गंभीरता से विचार करना [3½]
चाहिये।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सरकार इस समस्या का समाधान करने/ के लिये समुचित [3¾]
एवम् शीघ्र कदम उठाएगी।

इस पत्र की एक–एक कॉपी जयपुर शहर में प्रकाशित अन्य// अख़बारों के संपादकों को भी [4]
प्रेषित की जा रही है–

1) संपादक– जागरण समाचार पत्र, शास्त्रीनगर/ जयपुर–2 [4¼]

2) संपादक– नव युवक पत्रिका, वी.टी. रोड, जयपुर–2

3) संपादक/ सांध्यकालीन उजाला पत्र, वैशाली नगर, जयपुर–2 [4½]

4) संपादक– मॉर्निंग न्यूज पत्र, मालवीय/ नगर, जयपुर–1 [4¾]

भवदीय,

मधुसूदन दयाल शर्मा,

जयपुर नगर प्रदूषण विरोधी

समिती,

प्रबन्धक।// [5]

तृतीय खण्ड

(इसे 80 शब्द प्रति मिनिट की गति से लिखा जाए) [20]

राष्ट्र का स्वरूप

भूमि, भूमि पर बसने वाला जन और जन की संस्कृति, इन तीनों के सम्मिलन से/ राष्ट्र का स्वरूप बनता है। [¼]

भूमि का निर्माण देवप्रकृति ने किया है, वह अनन्त काल से है।/ उसके भौतिक रूप, सौन्दर्य और [½] समृद्धि के प्रति सचेत होना हमारा आवश्यक कर्त्तव्य है। भूमि के पार्थिव स्वरूप / के प्रति हम जितने [¾] अधिक जागृत होंगे उतनी ही हमारी राष्ट्रीयता बलवती हो सकेगी। यह पृथ्वी सच्चे अर्थों में// समस्त [1] राष्ट्रीय विचार धाराओं की जननी है। जो राष्ट्रीयता पृथ्वी के साथ नहीं जुड़ी वह निर्मूल है। राष्ट्रीयता की/ [1¼] जड़ें पृथ्वी में जितनी गहरी होंगी उतना ही राष्ट्रीयभावों का अंकुर पल्लवित होगा। इसलिये पृथ्वी के

भौतिक स्वरूप की/ आद्योपान्त जानकारी प्राप्त करना उसकी सुन्दरता, उपयोगिता और महिमा को पहचानना आवश्यक है। [1½]

इस कर्त्तव्य की पूर्ति सैकड़ों/ हजारों प्रकार से होनी चाहिये। पृथ्वी से जिस वस्तु का संबंध है, [1¾]
चाहे वह छोटी हो या// बड़ी, उसकी कुशल– प्रश्न पूछने के लिये हमें कमर कसनी चाहिये। पृथ्वी का [2]
सांगोपांग अध्ययन जागरणशील राष्ट्र/ के लिये बहुत ही आनन्दप्रिय कर्त्तव्य माना जाता है। गांवों और [2¼]
नगरों में सैकड़ों केन्द्रों से इस प्रकार के/ अध्ययन का सूत्रपात होना आवश्यक है। [2½]

धरती माता की कोख में जो अमूल्य निधियां भरी हैं, जिनके कारण/ वह वसुन्धरा कहलाती है [2¾]
उससे कौन परिचित नहीं होना चाहेगा? दिन–रात बहने वाली नदियों ने पहाड़ों की// पीस–पीस कर [3]
अगणित प्रकार की मिट्टियों से पृथ्वी की देह को सजाया है। हमारे भावी आर्थिक
अभ्युदय / के लिये इन सबकी जांच–पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है। पृथ्वी की गोद में जन्म लेने वाले [3¼]
खड़ पत्थर/ कुशल शिल्पियों से संवारे जाने पर अत्यन्त सौन्दर्य का प्रतीक बन जाते हैं। नाना भाँति के [3½]
अनगढ़ नग विंध्य की/ नदियों के प्रवाह में सूर्य की धूप से चिलकते रहते हैं, उन चीलवटों को जब चतुर [3¾]
कारीगर पहलदार कटाव// पर लाते हैं तब उनके प्रत्येक घाट से नई शोभा और सुन्दरता फूट पड़ती है। [4]
देश के नर/ नारियों के रूपमण्डल और सौन्दर्यप्रधान में इन पत्थरों का भी सदा भाग रहा है, अतएव हमें [4¼]
इनका भी ज्ञान / होना आवश्यक है। [4½]

पृथ्वी और आकाश के अन्तराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर/फैले हुए गम्भीर [4¾]
सागर में जो जलचर एवम् रत्नों की राशियां हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के// नये भाव राष्ट्र में [5]
फैलने चाहिये। राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नई किरणें/ जबतक नहीं [5¼]
फूटतीं तब तक हम सोये हुए के समान हैं।

यह भाव जब सशक्त रूप में जागता/ है तब राष्ट्र निर्माण के स्वर वायुमण्डल में भरने लगते हैं। [5½]
जहाँ यह भाव नहीं हैं वहाँ जन और/ भूमि का संबंध अचेतन और जड़ बना रहता है। जिस समय भी जन [5¾]
का हृदय भूमि के साथ माता// और पुत्र के संबंध को पहचानता है उसी क्षण आनन्द और श्रृद्धा से भरा [6]
हुआ उसका प्रणामभाव मातृभूमि के लिये/ प्रकट होता है। [6¼]

इतिहास के अनेक उतार– चढ़ाव पार करने के बाद भी राष्ट्रनिवासी जन नई उठती/ लहरों से आगे [6½]
बढ़ने के लिये आज भी अजर–अमर हैं। जन का सततवाही जीवन नदी के प्रवाह/ की तरह कर्म और [6¾]
श्रम के उत्थान के अनेक घाटों का निर्माण करना परम आवश्यक सा प्रतीत होता है// [7]

❍❍❍

DO NOT WRITE ANYTHING HERE